Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय विदेश नीति : परम्परागत व समकालीन आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शोभा गौतम*

* सह आचार्य (राजनीति विज्ञान) से. मु .मा .राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – भारतीय विदेश नीति का कई चरणों में विकास हुआ है। भारतीय विदेश नीति का इतिहास उसके औपनिवेशिक अतीत, शीत युद्ध के दौरान गुटनिरपेक्ष आंदोलन के रुख और 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण ने भारत को धीरे-धीरे एक अधिक व्यावहारिक और बहुआयामी विदेश नीति की ओर अग्रसर किया। स्वतंत्रता के बाद, भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, और रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांतों से प्रेरित थी। 1962 का चीन-भारतीय युद्ध, 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, और 1998 के परमाणु परीक्षण जैसे प्रमुख घटनाओं ने भारत की विदेश नीति की रणनीतियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। 21वीं सदी की शुरुआत में भारत ने वैश्विक शक्तियों के साथ अधिक संलग्न होना, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भाग लेना और एक अधिक व्यावहारिक विदेश नीति दृष्टिकोण अपनाना शुरू किया।वर्ष 2014 के बाद की अवधि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक अधिक मुखर और सक्रिय दृष्टिकोण द्वारा चिह्नित है, जिसमें वैश्विक शक्तियों, क्षेत्रीय पड़ोसियों और प्रवासी समुदायों के साथ बढ़ती भागीदारी शामिल है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत की परंपरागत विदेश नीति को रेखांकित करते हुए वर्ष 2014 से 2024 के काल में भारतीय विदेश नीति में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है। इस हेतु भारतीय विदेश मंत्रालय द्वारा जारी नीति पत्रों, आधिकारिक बयानों और रिपोर्टों, विशेषज्ञ राजनयिकों, नीति निर्माताओं और अकादमिक विशेषज्ञों के साक्षात्कार, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओंतथा पूर्व में प्रकाशित शोध पत्रों-पुस्तकोंका अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, एक्टईस्ट, आपूर्ति श्रृंखला।

प्रस्तावना – अंतरराष्ट्रीय संबंधों का परिदृश्य लगातार बदलता रहता है, जिसे भू-राजनीतिक परिवर्तनों, आर्थिक बदलावों और उभरती वैश्विक चुनौतियों से प्रभावित किया जाता है। वर्ष 2014 से 2024 के दौरान भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जो क्षेत्रीय और वैश्विक गतिशीलता के प्रति एक सूक्ष्म दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं। यह अवधि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक रणनीतिकपुनर्संयोजन को चिह्नित करती है, जिन्होंने विश्व मंच पर भारत की भूमिका को पुन: परिभाषित करने का प्रयास किया है।

विदेश नीति का अर्थ – विदेश नीति किसी सरकार की अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा, अपने मूल्यों को बढ़ावा देने और कूटनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय कारकों के साथ व्यवहार करने की रणनीति को संदर्भित करती है। यह कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो वैश्विक मंच पर किसी देश की अंत:क्रियाओं को आकार देता है। विदेश नीति के उद्देश्य विविध और परस्पर जुड़े हुए हैं, जो प्रत्येक राज्य के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण में योगदान करते हैं। रक्षा और सुरक्षा अक्सर इसके प्राथमिक लक्ष्य होते हैं।

भारत कीपारंपरिक विदेश नीति के प्रमुख तत्व :

1. गुटनिरपेक्षता– विदेश नीति के एक साधन के रूप में भारत की गुटनिरपेक्षता घरेलू परिस्थितियों और बाहरी वातावरण के साथ निरंतर अंत:क्रिया के माध्यम से विकसित हुई है। स्थायित्व, शक्ति के अस्थिर स्वरूपों का सामना करने की क्षमता और परिस्थितियों द्वारा अपेक्षित परिवर्तनों को आत्मसात करने का लचीलापन इस विकास की विशेषता थी। स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने की इच्छा, सोवियत संघ जैसे शक्तिशाली समाजवादी राज्य के साथ मित्रता का व्यावहारिक विकल्प और शांति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जैसी परिस्थितियों के संयोजन ने गुटनिरपेक्षता की अवधारणा और व्यवहार को आकार दिया। अपने विकास की प्रक्रिया में, गुटनिरपेक्षता ने छोटे अफ्रीकी-एशियाई राज्यों को रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्थाओं के बीच उलझे विश्व में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया। इन राज्यों के अंतत: गुटनिरपेक्ष आंदोलन की मुख्यधारा में विलय ने आंदोलन की मुख्य चिंताओं को पूर्व-पश्चिम तनावों से उत्तर-दक्षिण मुद्दों और नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में बदल दिया।

2. पंचशील सिद्धांत – पंचशील समझौते, जिसे औपचारिक रूप से तिब्बत क्षेत्र के साथ व्यापार और अंतर्संबंध पर समझौते के रूप में जाना जाता है, पर 29 अप्रैल, 1954 को चीन में भारतीय राजदूत एनराघवन और चीन के विदेश मंत्री झांगहान-फू ने हस्ताक्षर किए थे।पंचशील संधि की प्रस्तावना में पांच मार्गदर्शक सिद्धांत निर्धारित किए गए हैं: 1) एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान; 2) पारस्परिक अनाक्रमण; 3) पारस्परिक अहस्तक्षेप; 4) समानता और पारस्परिक लाभ्य और 5) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व। यद्यपि यह समझौता भारत ने चीन के साथ किया था। किंतु अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में भारत ने इन सिद्धांतों का पालन

सभी देशों के साथ किया है।

3. गतिशीलता और अनुकूलनशीलता– भारत सार्वभौमिकता, अभेदभाव और सत्यापन के सिद्धांतों पर आधारित सामान्य और पूर्ण निरस्त्रीकरण के लक्ष्य के प्रति दीर्घकालिक रूप से प्रतिबद्ध है और परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। 1948 में ही, भारत ने परमाणु ऊर्जा के उपयोग को केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों तक सीमित रखने और राष्ट्रीय आयुध भंडार से परमाणु हथियारों को हटाने का आह्वान किया था। भारत 1954 में परमाणु परीक्षण पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान करने वाला पहला देश था। इसके बाद कई अन्य पहल की गईं, उदाहरण के लिए, आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि और परमाणु हथियारों के अप्रसार पर अंतर्राष्ट्रीय वार्ता का आह्वान। जैसे य वर्ष 1978,1982,1988,2010सहित कई वर्षों में भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में निशस्त्रीकरण के समर्थन में महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखे हैं व उनका पालन किया है।

4. अन्य विशेषताएं – पंचशील के सिद्धांतों का पालन करते हुए भारत ने उपनिवेशवाद, नस्ल भेद, रंग भेद व तानाशाही का विरोध किया है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की संरचना में सुधार वउसकी निर्णय प्रक्रिया के लोकतन्त्रीकरण का समर्थक रहा है। भारत ने आरंभ से ही अपनी विदेश नीति में आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता की नीति अपनाई है। संयुक्त राष्ट्र संघ सहित अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं व संगठनों के कानून तथा राज्यों की संप्रभुता का सम्मान करते हुए भारत नेराज्यों के मध्य मतभेदों व विवादों का समाधान करने में अन्य देशों के हस्तक्षेप का विरोध करने की नीति अपनी है।

वर्ष 2014 के बाद भारतीय विदेश नीति में आए बदलाव – प्रस्तुत शोधपत्र वर्ष 2014 से 2024 के दौरान भारत की विदेश नीति के विविध आयामों का अन्वेषण करता है, जिसमें आर्थिक कूटनीति, रणनीतिक साझेदारी, क्षेत्रीय सुरक्षा और वैश्विक शासन जैसे प्रमुख क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। उक्त अवधि में मोदी सरकार की सक्रिय और आक्रामक विदेश नीति पर जोर देने की कई पहलें सामने आई हैं, जिनका उद्देश्य भारत की रणनीतिकस्वायत्तता को मजबूत करना और प्रमुख शक्तियों और पड़ोसी देशों के साथ गहरे संबंध स्थापित करना है। इससे सिद्ध होता है कि भारत अब यह सुनिश्चित करने के लिए बाध्य है कि वह वैश्विक एजेंडे को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाए, वह 'नियमों का पालन' करने के बजाय 'नियम बनाने' का हिस्सा बने और बहुध्रुवीय विश्व में एक मजबूत ध्रुव के रूप में उभरे। इससे विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने की आकांक्षा जुड़ी हुई है, जिसके लिए बड़ी संख्या में देशों ने पहले ही समर्थन का वादा किया है।

पारंपरिक कूटनीति के साथ-साथ, इस अवधि में भारतीय विदेश नीति की संरचना में आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी तत्वों का एकीकरण भी देखा गया है। जिनका निम्नानुसारबिंदुवारविश्लेषण किया गया है :

1. पड़ोसी प्रथम की नीति – 'पड़ोसी प्रथम' नीति, जो भारत के अपने निकटतम पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के प्रबंधन का मार्गदर्शन करती है, स्थिरता और समृद्धि के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी, जन-उन्मुख, क्षेत्रीय ढांचे के निर्माण पर केंद्रित है, जिसमें भौतिक, डिजिटल और लोगों से लोगों के बीच संपर्क का निर्माण शामिल है। भारत इन देशों के साथ परामर्शात्मक, गैर-पारस्परिक और परिणाम-उन्मुख आधार पर जुड़ता है, जो सम्मान, संवाद, शांति और समृद्धि के सिद्धांतों से प्रेरित है।

इस संबंध में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने लोकसभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि ...भारत की 'पड़ोसी पहले' नीति के हिस्से के रूप में, सरकार पड़ोसी देशों की जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुसार आवश्यक विकासात्मक सहायता और क्षमता निर्माण की पहल कर रही है, जिससे उनके देशों के समग्र आर्थिक विकास में योगदान मिल रहा है। इस दृष्टिकोण के तहत, भारत बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे से लेकर समुदाय से संबंधित परिसंपत्तियों और प्लेटफार्मों के प्रावधान, क्षमताओं में वृद्धि और वित्तीय, बजटीय और मानवीय सहायता प्रदान करने वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के विकास पर पड़ोसी देशों की सहायता कर रहा है।

2. वैश्विक शांति का पक्षधर – भारत संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है, जिसने चार महाद्वीपों में 49 शांति अभियानों में भाग लिया है और कुल 2,00,000 से अधिक सैनिकों का योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त रूस-यूक्रेन संघर्ष तथा इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष में भी भारत ने तटस्थ भूमिका में नहीं रहकर स्वयं को शांति के पक्ष में बताया। अगस्त 2024 में यूक्रेनी राष्ट्रपति व्लादिमीरजेलेंस्की के साथ अपनी बातचीत में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत यूक्रेन में शांति बहाल करने के लिए 'सक्रिय भूमिका' निभाने के लिए हमेशा तैयार है। श्री मोदी ने कहा, 'हम (भारत) तटस्थ नहीं हैं। शुरू से ही, हमने पक्ष लिया है। और हमने शांति का पक्ष चुना है।' प्रधानमंत्री ने देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

3. एक्टईस्टपॉलिसी – भारत की एक्टईस्ट नीति (AEP) को देश की विदेश नीति संरचना में उच्च प्राथमिकता प्राप्त है। यह आसियान देशों के साथ संबंध बनाने और क्षेत्र के राज्यों के सामने आने वाले मानवीय सहायता, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और शक्ति संतुलन जैसे विविध मुद्दों के समाधान हेतु समर्पित प्रयासों और संसाधनों से स्पष्ट है।इस नीति की शुरुआत से भारत का आसियान से द्विपक्षीय व्यापार 2014-15 के 74 अरब डॉलर से बढ़कर 2023-24 में 121 अरब डॉलर हो गया है। आसियान में भारत का वार्षिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 2019 के 1.5 अरब डॉलर से बढ़कर 2023 में 5.6 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2000-24 के दौरान भारत में आसियान का संचयी निवेश 117 अरब डॉलर था। इसके अतिरिक्त एईपी ने भारत को हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए), बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय, तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक), और प्रशांत द्वीप समूह मंच (पीआईएफ) जैसी अन्य क्षेत्रीय संस्थाओं को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया।

4. ग्लोबलसाउथ के नेतृत्वकर्ता के रूप में भारत की नीति – 'ग्लोबलसाउथ' शब्द अंतरराष्ट्रीय राजनीति के नेताओं और टिप्पणीकारों के बीच वैश्विक विभाजनों को दर्शाने और वैश्विक मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखने वाले देशों को एक साथ लाने के लिए लोकप्रिय हो गया है। इन देशों को लग सकता है कि उनके विचारों को पूरी तरह से नहीं सुना गया है या बहुपक्षीय व्यवस्था में उनके हितों को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं किया गया है।जी20 की अपनी अध्यक्षता के दौरान, भारत ने वैश्विक दक्षिण की आवाज बनने को प्राथमिकता दी है और चिंताओं को उठाने के लिए कदम उठाए हैं। इसमें कोविड महामारी के दौरान विकासशील देशों को टीके और दवाइयाँ भेजना शामिल है। भारत ने वॉयस ऑफ ग्लोबलसाउथ शिखर

सम्मेलन की मेजबानी की और यह सुनिश्चित किया कि यह क्षेत्र जी7 शिखर सम्मेलन में केंद्रीय भूमिका में रहे। भारत अफ्रीकी संघ को जी20 का पूर्ण सदस्य बनाकर वैश्विक दक्षिण की वकालत कर रहा है। दक्षिण केंद्र के सहयोग से, भारत ने वैश्विक दक्षिण के निहितार्थों पर विचार करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कराधान पर एक कार्यक्रम आयोजित किया।

5. वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखला काअग्रगामी– हाल के वर्षों में, दुनिया भर की कंपनियों ने 'चीन+1' रणनीति अपनानी शुरू कर दी है। चीन पर निर्भरता कम करने के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाना। भारत उस '1' स्थान के लिए शीर्ष दावेदार के रूप में उभर रहा है।इस संबंध में वर्ष 2021 में भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (एससीआरआई) नामक औपचारिक समझौता हुआ। भारत को इस पहल से कई तरह से लाभ मिलने की उम्मीद है:

i. यह बदलते वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला परिदृश्य में भारत को एक विश्वसनीय सोर्सिंग भागीदार के रूप में स्थापित करेगा।
ii. आत्मनिर्भर भारत पहल को और बढ़ावा मिलेगा।
iii. भारतीय अर्थव्यवस्था की ओर अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित होगा।
iv. भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीनी प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिए मजबूत साझेदार मिलेंगे।

सांस्कृतिक कूटनीति व प्रवासी भारतीयों की भूमिका – भारत के विदेशी समुदायों की भागीदारी उसकी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में।प्रवासी भारतीयों की विदेश नीति द्वारा पेश की जाने वाली समस्याओं और अवसरों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) – नेतृत्वकारी सरकार विशेष ध्यान दे रही है। विदेशों में भारतीय समुदायों के महत्व ने कुछ ही लोगों में नई शक्ति का संचार किया है, जब वह प्रधानमंत्री थे, तब विकास यात्रा और रणनीतिक पूंजी के रूप में विदेशों में भारत की विदेश नीति के हितों को बढ़ावा दिया। साथ ही, मोदी सरकार को भारत से उत्पन्न होने वाले मुद्दों से निपटने में काफी समय लगा ना पड़ा जिससे उसकी वैश्विक पहचान का विस्तार हुआ है। भारतीय प्रवासी, जिन्हें कभी मुख्य रूप से धन प्रेषण और आर्थिक समर्थन केस्रोत केरूप में देखा जाता था, अब भारत की वैश्विक रणनीति के केंद्र में हैं। मोदी सरकार प्रवासी समुदाय को न केवल एक आर्थिक परिसंपत्ति के रूप में देखती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत के राजनीतिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक हितों को आगे बढ़ाने के एक साधन के रूप में भी देखती है।

निष्कर्ष – उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि भारत की पारंपरिक विदेश नीति में निहित आधारभूत मूल्य का समावेश वर्तमान में भी देखा जा सकता है इस प्रकार से वर्ष 2014 के बाद भारत की विदेश नीति को लागू करने का केवल तरीका बदला है किंतु उद्देश्य व मूल्यों में विशेष अंतर नहीं आया है। अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों व आंतरिक आवश्यकताओं के आधार पर विदेश नीति के मूल्य की प्राथमिकता तथा वरीयता क्रम में अंतर आना प्रत्येक देश के लिए स्वाभाविक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. https://www.diplomacy.edu/topics/foreign-policy/
2. रेड, स्टीवनबी; मिंट्ज, एलेक्स (5 अप्रैल 2013)। 'राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति निर्णय लेने पर नीतिगत दृष्टिकोण' ।पॉलिसी स्टडीज जर्नल।41(S1)"https://en.m.wikipedia.org/wiki/Doi_(identifier)" *doi:10.1111/psj.12010.ISSN0190-292X.S2CID154618621*
3. भारत की गुटनिरपेक्षता: JSTOR पर वैचारिक पुनर्निर्माण का एक प्रयास https://share.google/hNidUFQon5NopiyJK
4. चीन की विदेश नीति के 'पाँचसिद्धांत': इसकी शुरुआत कैसे हुई, अब यह कहाँ है Explained News - The Indian Express https://indianexpress.com/article/explained/everyday-explainers/chinas-panchsheel-five-principles-today-9419195/
5. निरस्त्रीकरण – संयुक्त राष्ट्र में भारत का स्थायी मिशन, न्यूयॉर्क https://www.pminewyork.gov.in/pages?id=eyJpdiI6IlZtdUdZUS tOcGQ1blowUVIrem hpYWc9PSIsInZhbHVlIjoicHVwNUlUV3V0K3V0Zk95cnV4YlZLUT09Iiwib WFjoiNTFiZTRlZGZjMjk3YTE5MDA0YzNmMmM4YTg5M2QyMjQ2ZmUyYWJiMTgyZWVmYTc5NjBjY2Y3MGZlZTBjYTA3NiJ9&subid=eyJpdiI6IkNyUFV1VCsyWHZiZEl2cStyNEYrbkE9PSIsInZhbHVlIjoicFU1TDBrWVp3TzhqaXRRajB1OHpSQT09IiwibWFjIjoiZmY4NGI2NGIzMTE1MDRhNDkyYWFlODFkNzQ3ZDUwMWMwNTFmMzMwZjZlYjBiMWM0Yzc5YWM4ZTQ5NmI5MzA5NCJ9
6. विशिष्ट व्याख्यानों का विवरणी https://share.google/b9C8BrHSUmVGuQVhW
7. QUESTION NO- 262 INDIA'S NEIGHBOURHOOD FIRST POLICY https://share.google/L8ZTTfRraWdJDL1so
8. The United Indian | Social Cause | Role Of India in Global Peace keeping & Humanitarian Aid https://share.google/CzkgO7gxmdw39L8SH
9. यूक्रेन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, भारत तटस्थ नहीं, शांति के पक्ष में – द हिंदू https://www.thehindu.com/news/national/prime-minsiter-narendra-modi-on-a-historic-visit-to-ukraine-on-august-23-2024/article68558850.ece/amp/#amp_tf=From%20%251%24s&aoh=17524135267861&csi=1&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com
10. भारत की एक्ट ईस्ट नीति: रुझान, प्रभाव और संभावनाएँ – इंडो–कैनेडियन वॉयसीज https://voiceonline.com/indias-act-east-policy-trends-impact-and-prospects/
11. वैश्विक दक्षिण क्या है?https://share.google/SLOLP3etm8HAsr0u7
12. दक्षिण: जी–20: भारत कैसे वैश्विक दक्षिण की आवाज बनकर उभरा – द इकोनॉमिक टाइम्स https://share.google/Ccs8PVfV2eeMz4Uiw
13. https://share.google/Alb8PFZOXz5KoQHmW

****